

(1)

Prof. Pankaj K. Gupta
Assistant Professor (Eco.)
R.B.G.R. College, Mahanagar

TDC-II Eco. (Hons.)
Paper-III Monetary Eco.
Group-B Module-4
Basic Concept of Money

Topic- Role of Money in Capitalist Economy.

इंजीवादी अर्थव्यवस्था में मुद्रा की भूमिका

इंजीवादी अर्थव्यवस्था में प्रत्येक व्यक्ति को निजी सम्पत्ति रखने तथा उसका इच्छानुसार उपयोग करने की स्वतंत्रता होती है। उत्पत्ति के साधनों पर भी व्यक्तिगत स्वामित्व होता है। और उनसे प्राप्त होने वाली आय को इच्छानुसार व्यय करने अथवा बचत करने की स्वतंत्रता होती है। उत्पादन का कार्य अधिकतम लाभ कमाने के उद्देश्य से व्यक्तिगत इंजीनियरों द्वारा स्वतंत्र रूप से संचालित किया जाता है। स्पष्ट है कि इंजीवादी अर्थव्यवस्था का आधार आर्थिक स्वतंत्रता है। इस आर्थिक स्वतंत्रता के बावजूद इंजीवादी समाज में लाखों व्यक्ति एक-दूसरे के सहयोग से उत्पादन के बड़े-बड़े काम संगठित करते हैं और सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था का राष्ट्रीय स्तर पर संचालन होता है।

प्रैजीवादी अर्थव्यवस्था में कीमत-संयंत्र ⁽²⁾

प्रैजीवादी प्रणाली का संचालन किसी केंद्रीय सत्ता या नियंत्रण द्वारा नहीं होता। समन्वय, नियंत्रण तथा मार्गदर्शन का कार्य कीमत-संयंत्र द्वारा किया जाता है। यह कीमतों द्वारा ही निर्धारित होता है कि किन वस्तुओं का तथा किन्हीं मात्रा में किसके लिए और कैसे उत्पादन होगा। उपभोग, बचत और निवेश भी कीमतों द्वारा प्रभावित होते हैं। प्रैजीवादी अर्थव्यवस्था में बाजारों के माध्यम से क्रय-विक्रय की जाने वाली सभी वस्तुओं तथा सेवाओं की कीमतें माँग और पूर्ति की पारस्परिक सम्बन्धों द्वारा निर्धारित होती हैं। व्यक्तियों द्वारा की गई माँग की मात्रा मुख्यतः उनकी आय की मात्रा पर निर्भर करती है। आय का निर्धारण मुख्यतः उत्पादन की मात्रा और उत्पत्ति के साधनों को उनकी सेवाओं के लिए दी गई कीमत के आधार पर होता है। साधनों अथवा सेवाओं की कीमतों में परिवर्तन उपभोक्ताओं की माँग को प्रभावित करते हैं। इसका प्रभाव उत्पादन अथवा पूर्ति की मात्रा तथा साधनों की माँग पर पड़ता है। बचत तथा विनियोग की मात्रा भी

(3)

बहुत कुछ आय के द्वारा प्रभावित होती है तथा मांग व शक्ति को प्रभावित करती है। कीमत - प्रक्रिया, जिससे सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था निर्देशित होती है, मुद्रा की ही है। मुद्रा कीमत - प्रक्रिया का आधार है। कीमतों मुद्रा के रूप में ही व्यक्त की जाती हैं। कीमतों के आधार पर उत्पादन, उपभोग और वितरण सम्बन्धी निर्णय किये जाते हैं। मुद्रा ने ही मूल्य मापन का कार्य करके पिनिमय का विकास किया है और विभिन्न प्रकार के आर्थिक आकलन तथा लेखा-जोखे की सुविधा प्रदान की है। वास्तव में मुद्रा पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के संचालन के लिए जीवन रक्षक है। निम्नलिखित तथ्यों द्वारा यह बात स्पष्ट हो जाती है -

- (1) मुद्रा पूँजीवादी प्रणाली की रीढ़ है।
- (2) मुद्रा आर्थिक प्रक्रियाओं के लिए तेल का काम करती है।
- (3) मुद्रा पूँजी-निर्माण का साधन है।
- (4) सार्व बाजार की स्थापना व संचालन के लिए मुद्रा का होना आवश्यक है।

(4)

- (5) उपभोक्ता की सर्वाभिमता भी मुद्रा पर ही निर्भर करती है
- (6) मुद्रा वर्तमान तथा भविष्य के बीच कड़ी है
- (7) मुद्रा के कारण ही पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में आर्थिक उतार-चढ़ाव होते रहते हैं

सुद्ध